

Written by शीतल पी सहि
Thursday, 21 June 2018 14:02

: 000000 00 00 000000 ? 000000 00 000000 000000 00 00000000000000 : 0000000000 0000
00 00000000 00000 0000 , 0000000000 00000000 00 000000 0000000000 00000000 00 00000000 :
000000 00 00000000 0000000000 00 00 000000 0000 00 0000 00 00000000 00 00000000 00000000
00 000000 000000 00 00000000 :

00000 00 00000

00 0000000000 :मेरी पोती दल्लि के कसकूल में पढ़ती है जिसे कश्चियिन मशिनरी चलाते है कस्मिस-अवकश केदौरान वहां
कस्मिस-उत्तु सव की तैयारयिँ चल रही थीं क भजनों की डायरी उसकेहाथ में थमा दी गयी पता चला कि उसकेसकूल केहर बच्चे केपास है जिसमें
यीशु मसीह की वन्दना करते भजन है अगर वह “शशि मंदरि”में पढ़ती होती तो दूसरे कस्मि के भजन गा रही होती और किसी मदरसे में पढ़ रही होती तो
तीसरे कस्मि के!

सवाल यह है कि शिक्षा संस्थानों में बच्चों के ज़बरन धर्म की घुट्टी पल्लाने वाले किसी भी करतब की अनुमति क धर्म नरिपेक्ष देश में क्यों होनी चाहयि
?

शीतल की इस वाल पर इस पोस्ट होते ही वचिारों क तांता लग गया किसी ने लिखा कि इजराइल और जापान ,न केवल शिक्षा में कुरुपता है, बल्कि
अपनी मातृभाषा में ही शिक्षा देते हैं क क कहना था कि धार्मिकिसमूहों के अपने संस्थान चलाने के इजाज़त है जहाँ वे अपनी श्रद्धा केहिसाब से
भजन गवाते हैं उधर कने बताया कि अलीग के मशिनरी सकूलों के ये आदेश दा ग है कि सकूल केहनिदू बच्चों के ईसाई धर्म की शिक्षा न दें
जबकि कअन् य क कहना था कि जबरदस्ती धर्म-ईश्वर क अपीम चटा रहे है बच्चों के अधकिंश गार्जयिन इससे ब खुश हो जाते हैं

आइये देखयि कि बाकी लोगों क इस पोस्ट पर क् या-क् या कहना है: -

Gaurav Singh Rathore नहीं होनी चाहि .. सहमत सर

Vikas Tailor Feeding religion via education is the root cause of making it legalized! It should be ended

Prabhat Kumar जो सेंसस कराया था उसके भी आंकड़े सार्वजनिकिनहीं कि ग

Written by शीतल पी सहि

Thursday, 21 June 2018 14:02

शाखा अपराजिता इसीलॉ हम कॉमन स्कूल ससि्टम के मांग करते है

Pinto CP Ignatius Government school zindabad

शाखा अपराजिता Government school भी कॉमन , केन्द्रीय वदियालय , नवोदय , नेतरहाट , जलिया स्कूल , वरीय स्कूल , इतने सारे संस्तर क कोई मतलब नहीं , जब सब नागरकिसमान है

Deepak Singh sahi kaha aapne

Pankaj Srivastava धार्मकिसमूहों के अपने संस्थान चलाने के इजाज़त है जहाँ वे अपनी श्रद्धा केहसाब से भजन गवाते है...सरकारी स्कूलों में सब प्रार्थना हँ हँ हँ धर्म के चलती है...बेहतर हो के प्रार्थनाओं क रविज ही बंद हो...या फिर सभी धर्मों के जानकारी दी जाँ और बच्चे आगे चलकर अपना धर्म खुद चुनें...नास्तकित्ता के तरकों से भी परचिति कराया जाँ ...पर इन बातों क कोई अर्थ नहीं..अभी सबकेलाँ ब्लैकबोर्ड भी नहीं है...

Raj Kumar सखिँ, लेकिन अन्य धर्म के परव-त्योहार पर भी उसी जोश, उत्साह से सखिँ, ताक बच्चे धर्म के साथ संस्कृति के जान सकेँ

Ratan Pandit भाई आपके लसि्ट में कोई भक्त तो नहीं???

Ahmad Kamal Siddiqui स्कूल के फार्म पर धर्म वाला कलम ही नहीं होना चाहँ ,,,,

Manika Mohini शाम टी वी में कुछ ऐसी ही खबर आ रही थी क अलीगँ केमशिनरी स्कूलों के ये आदेश दाँ गँ है क स्कूल के हनिदू बच्चों के ईसाई धर्म के शकिसा न दें

Kapilesh Prasad ऐसी अनुमतति बलिकुल नहीं होनी चाहँ

Santosh Kr. Pandey Prashn ye Hai ki aap bitiya ko Christian school me kyo bhejte haiN jabki naam see aap Hindu haiN ? Isi me aapke prashn ka uttar Hai. Bakiya siddhant tou upar Kai

Written by शीतल पी सहि

Thursday, 21 June 2018 14:02

logoN ne thela Hai lekin wahan se koi raah na niklegi aur na hi milegi.

Sheetal P Singh दलिली में स्कूल चुनना किसी के हाथ में नहीं । स्कूल में दाखला मलिन । कअसाधारण प्रतियोगिता है । नेबरहुड मेरिट में उसे यह स्कूल मिला था !

SO U R Abh गर वो शशु मंदिर में पढ़ती तो 'वंदे सदा वत्सले मातृभूमि' पढ़ती जिसमे मातृभूमि की आराधना है. क्या गलत पढ़ती. आज प्राइवेट व मशिनरी स्कूल की भारी भरकम फीस के मुकबले शशु मंदिर की सस्ती फीस मे उच्च गुणवत्ता की पढ़ाई मलि जाती है. बटिया के वहीं भेज दीजा। . शशु मंदिर वाले ना जात देखते हैं ना धर्म. याद है ना आसाम क मुस्लिम धर्मावलंबी छात्र जोकि शशु मंदिर में पढ़ता था इंडिया टॉपर था.

Vijay Kumar बलिकूल नहीं होनी चाहि । आज मेरी बेटी ने बताया कि उसके स्कूल (CMS) में आज कोई बाबाजी आये थे और उन्होंने सभी बच्चों के गीता प।ई है। ये स्कूल, जहां हमलोग अपने बच्चों के शिक्षा पाने के भेजते हैं, जबरदस्ती धर्म-ईश्वर क अफीम चटा रहे हैं बच्चों के। अधकिंश गार्जयिन इससे ब। खुश भी होंगे, की चलो कम-से-कम स्कूल ने महान सनातन संस्कृति क खयाल तो रखा..

Avanish Mishra Cms m gandhi ji roj gita padate lkin sir sb jagh prob hai ap prob jan k bhi wahi bhejenge padne k lie

Shamim Ansari kisi ke liye ye choot nhi honi chahiyeit should be private

Imraan Imran मैं भी जिस कैथोलिक्स स्कूल में प। हू वहां की डायरी के पहले दस पंद्रह पन्नों पे यीशु के गुणगान करते भजन लिखे होते थे जिन्हें हम सब असेम्बली में रोज गाते थे

अच्छी बातें ही लिखी होती थी उनमे तो कभी किसी ने ऐतरा। भी नहीं किया.! पर ये र। रूरी ची। बंद कर देनी चाहिये स्कूलों में ..!

Saurav Sharma सब फ़जी है ये

Parveen Abbasi मुझे नहीं लगता मशिनरी स्कूलों से अच्छी training कहीं होती हे

Written by शीतल पी सहि

Thursday, 21 June 2018 14:02

Sheetal P Singh वषिय पर रहें []

Prakash Govind सवाल ये है कि स्कूल के माहौल में/पाठ्यक्रम में वंदना हो ही क्यों ?? ये बच्चे तो स्वयं में भगवान की प्रतिमूर्ति हैं

Gati Upadhyay Maaf kijiyega sir Kya ap missonry likhte waqt smjh nhi paye ki missionary ka primary mission Kya h secondary mission educate krna... Siksha agr dharm se nhi judegi... To mass education impossible h... Is bat ka Rona rone ka Kya mtlb h kuch smjh nhi pa rhi hu.. Apki bato se pahli bar asahmat hu

Suvesh Verma शिक्षा ही [] कता के सूत्र में बाँधती है [] लेकिन भारत ही शायद विश्व का [] कमात्र देश होगा, जहाँ शिक्षा की ही [] कता नहीं है और मनमानी शिक्षा दी जा रही है [] इजराइल और जापान , न केवल शिक्षा में [] कुपता है, बल्कि अपनी मातृभाषा में ही शिक्षा देते हैं, अपनी शिक्षा के बलबूते ही ख [] है []